SYNOPSIS

आधुनिक दलित कहानियों में स्त्री चेतना (चुनी हुई कहानियों के विशेष संदर्भ में)

Adhunik Dalit Kahaniyon Mein Stri Chetana (Chunee Huyi Kahaniyon Ke Vishesh Sandarbh Mein)

Submitted by

Arunima A.M

21PHHIF003

Supervisor

Dr. Shobhana Kokkadan

Professor, Department of Hindi

Submitted to

Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women Coimbatore - 641 043

July 2024

आधुनिक दलित कहानियों में स्त्री चेतना (चुनी हुई कहानियों के विशेष संदर्भ में)

Adhunik Dalit Kahaniyon Mein Stri Chetana (Chunee Huyi Kahaniyon Ke Vishesh Sandarbh Mein)

दलित शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'दल' धातु से हुई, जिसका अर्थ है फटना, खंडित होना, टूटना, जो दला गया, दबाया गया इत्यादि। दलित वर्ग से एक वर्णहीन वंश का बोध होता है। इसे चमार, मेहतर वंशी जैसे नाम से पुकारते है। दलित का शाब्दिक अर्थ है- कुचला हुआ। सदियों से दमित, पीडित और शोषित व जाति से पिछड़े हुए लोग दलित शब्द के अंतर्गत आते है। सवर्ण समाज में तिरस्कृत वर्ग को दलित कहा जाता है। दलित एक शब्द ही नहीं, एक वर्ग है, विचार है, दर्शन है, टूटने का अहसास है।

आज दलित समाज में सबसे ज्यादा अत्याचार और पीड़ा दलितों को झेलनी पड़ रही है। दलित महिलाओं पर अत्याचार, बलात्कार, तिरस्कार और उत्पीड़न की हजारों घटनाओं के पीछे उनका दलित होना ही एक बड़ा कारण है क्योंकि उनके प्रति उच्च जाति समाज की धारणा और व्यवहार आज भी ब्राह्मणवादी परंपरा से प्रभावित है। यही कारण है कि दलित स्त्रियाँ सबसे ज्यादा प्रतिरोध और विरोध भी करती दिखाई देती है।

<u>प्रेरणा एवं सामग्री स्त्रोत</u>

प्रेरणा : दलित कहानियों में स्त्रीयों पर शोध कार्य करने की प्रेरणा मुझे इसलिए हुआ कि : मैं बचपन से ही दलित महिलाओं की समस्याओं को देखती रही हूँ। जहाँ तक मुझे उनकी समस्याओं और पीड़ाओं के बारे में पता चला है, उससे मुझे दलित महिलाओं की चेतना के विभिन्न परिदृश्यों का अध्ययन करने और महिलाओं के आंतरिक और बाह्य जीवन संघर्षों के बारे में अधिक जानने की जिज्ञासा हुई है। दलित साहित्य में कहानी विधा में दलित महिलाओं की

कहानियों पर बहुत अधिक शोध नहीं हुआ है, इसलिए मैंने आधुनिक दलित कहानियों में महिलाओं के संघर्ष और प्रतिरोध का अध्ययन किया है।

<u>शोध का उद्देश्य</u>

- शोध के अध्ययन से : आधुनिक दलित स्त्री कहानियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- समसामयिक परिप्रेक्ष्य में समाज में प्रतिबिंबित दलित स्त्री की समस्याओं का निरूपण: आधुनिक दलित स्त्री कहानियों के विशेष संदर्भ में।
- आधुनिक दलित स्त्री कहानियों में स्त्री की सांस्कृतिक चेतना, जीवन संघर्ष, प्रतिरोध एवं स्त्री अस्मिता की खोज।
- दलित स्त्रियों के प्रति समाज तथा साहित्य में हो रहे शोषण का चित्रण।

दलित स्त्रीयों के विरुद्ध होनेवाली समस्याओं, संघर्षों, विसंगतियों, तनावों, व्यथाओं को तार्किक क्षमता से उजागर करने का प्रयास करना ।

- दलित स्त्री को अपने अस्तित्व और अपनी अस्मिता की पहचान करना, तथा मानसिक रूप से सुदृढ़ बनाना।
- दलित स्त्री को अपने भीतर सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक रूप से मानसिक परिवर्तन लाना।

<u>साहित्य समीक्षा</u>

- जीना जोन - “आधुनिक हिन्दी और मलयालम दलित कहानीःएक तुलनात्मक अध्ययन”, श्री शंकराचार्या यूनिवेर्सिटि ऑफ सन्सकृत, कालडी, २०२१
- सोनिया माला, हिन्दी का दलित कहानी साहित्यःइक्कीसवीं सदी के परिप्रेक्ष्य में, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, २०१६

- विजय कुमार, हिन्दी दलित कथा साहित्य में स्त्री-चेतना का स्वरूप, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणासी, २०१४
- कुमारी अन्तिमा, समकालीन हिन्दी दलित कथा साहित्य में दलित स्त्री, अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद, २०१५
- संगीता राय, हिन्दी दलित कहानी और परिवर्तित युग संदर्भ, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभांग, २०१४
- अवधेश कुमार सिंह, हिन्दी दलित साहित्य में स्त्री-चेतना, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणासी, २०१३
- नारायण, हिन्दी दलित कहानीःविविध आयाम, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, २०१०
- शीला यल्लप्पा भंडारी, हिन्दी साहित्य में दलित नारी चेतनाःएक अध्ययन, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड, २००६
- नीलिमा सेठ, समकालीन हिन्दी कहानी में स्त्री विमर्श, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणासी, २००५

वर्तमान परिदृश्य में संवैधानिक अधिकारों एवं जागरूकता अभियानों के कारण भारतीय सामाजिक संरचना में अनेक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। लेकिन समाज में अभी भी स्त्री-पुरुष, दलित और गैर-दलित, अमीर और गरीब, ग्रामीण और शहरी, काले और गोरे के बीच गहरी खाई है। दलित महिलाओं की हालत बद से बदतर है। तथापि, दलितों और महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। परंतु जाति, अपमान, तिरस्कार, शोषण और उत्पीड़न की मजबूत दीवार को पूरी तरह से तोड़ने में समय लगेगा, लेकिन अच्छी खबर यह है कि अब दलित लेखकों और महिला लेखकों द्वारा दलित-महिला जीवन की भयावह त्रासदी को समाज के सामने लाने और उससे उबरने के लिए एक संयुक्त प्रयास किया जा रहा है। परंतु दलित महिलाएं अभी

भी पुरुषों की तरह जागरूक और मजबूत नहीं हो पाई हैं। भारत की वर्तमान सामाजिक संरचना में इन दलित महिलाओं की दयनीय स्थिति और उससे मुक्ति के उनके प्रयासों का विश्लेषण करने और लोगों को समझाने के लिए मैंने 'आधुनिक दलित कहानियों में स्त्री चेतना (चुनी हुई कहानियों के विशेष सन्दर्भ में)' विषय पर शोध करना उचित समझा।

अध्ययन की सुविधा के लिए शोध-प्रबंध को कुल पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है -

प्रथम अध्याय है 'दलित स्त्री चेतना एक अध्ययन' । प्रस्तुत अध्याय में चेतना के शब्द, अर्थ एवं परिभाषा, दलित स्त्री की अवधारणा, दलित साहित्य, भारतीय दलित साहित्य के संबंध में सामान्य परिचय दिया है। साथ ही दलित कथा-साहित्य के विभिन्न परिदृश्य संबंधी विषय़ों पर भी प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय है 'हिन्दी के प्रमुख दलित कहानियाँ एवं स्त्री पात्र' । इसमें आधुनिक दलित कहानियों में अंकित स्त्री पात्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। तदुपरान्त दलित स्त्री पात्रों पर संघर्ष, पीडित दलित स्त्री, दलित स्त्री प्रतिरोध का केंद्र बनी निड़र दलित स्त्री पत्रों के बारे में भी चर्चा की गयी है ।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है 'दलित स्त्री कहानियों में अस्मिता बोध एवं जीवन संघर्ष - चुनी हुई कहानियों के सन्दर्भ में'। इसके अंतर्गत आधुनिक दलित कहानियों में स्त्री अस्मिता एवं जीवन संघर्ष को सामाजित, आर्थिक, सांस्कृतिक- धार्मिक परिप्रेक्ष्य पर विवेचन किया गया है । साथ ही, चेतना जागृति आंदोलनों से प्रेरित दलित महिलाओं द्वारा अपनी पहचान बनाए रखने के संघर्षपूर्ण प्रयासों का सूक्ष्म रहस्योद्घाटन भी होता है।

चतुर्थ अध्याय है 'दलित स्त्री चेतना एवं प्रतिरोध - चुनी हुई कहानियों के सन्दर्भ में'। इसमें प्रतिरोध के आज के संदर्भों को समाज के विभिन्न चरणों से

लेकर साहित्य में प्रतिरोध के बदलते विभिन्न परिदृश्य को दिखाने का प्रयास किया है। प्रतिरोध का ऐतिहासिक परिदृश्य, दलित स्त्री एवं प्रतिरोध का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य पर विस्तार विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। इसमें दलित स्त्री प्रतिरोध का विभिन्न रूपों को दर्शाया है।

पंचम अध्याय - 'आधुनिक दलित कहानियों का शिल्प एवं भाषा वैशिष्ट्य' में चुनी हुई दलित कहानियों की शिल्पगत वैशिष्ट्य एवं भाषा वैशिष्ट्य के आधार पर विभाजित किया है। शिल्प, शिल्प का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, शिल्पगत वैशिष्ट्य के अंतर विषयवस्तु, कथानक, चरित्र चित्रण, देशकाल तथा वातावरण, शीर्षक का प्रयोजन, भाषा शैली आदी अनुच्छेदों में विवेचित किया है। भाषा शैली में वर्णनात्मक शैली, आत्मकथा शैली, स्वप्न शैली, संवाद शैली, चित्रात्मक शैली, नाटकीय शैली, फैटैसी आदी शैली का विश्लेषण किया गया है। आधुनिक दलित कहानियों के भाषा वैशिष्ट्य में शब्द चयन के अंतर तत्सम, तत्भव, देशज शब्द, अंग्रेज़ी, अरबी - फारसी आदि शब्दों का भी विश्लेषणा किया है।

उपसंहार में दलित साहित्यकारों ने समान अधिकारों की माँग, अस्तित्व की सुरक्षा आदि मुद्दों पर प्रतिनिधि स्त्री पात्रों के माध्यम से मौलिक विचार व्यक्त किए और स्त्री के व्यक्तित्व की गरिमा का खूब समर्थन किया है। कहानी में चित्रित दलित स्त्रीयों की समस्याओं को लेकर समसामयिक परिप्रेक्ष्य में अधिक दलित लेखिकाओं एवं लेखकों प्रयत्न कर रही है।

दलित स्त्रियों पर सार्थक बातचीत और उनकी समस्याओं पर बहस लगभग दो दशकों का परिणाम है। दलित स्त्रियाँ लंबे समय तक साहित्य में मौजूद रहीं लेकिन जाति-आधारित शोषण के कारण वे समाज के साथ-साथ साहित्य में भी हाशिये पर रहीं; वे कभी भी केंद्र में चर्चा और बहस का विषय नहीं बने। दलित स्त्री विमर्श दलित आंदोलन और महिलाओं की आंतरिक चेतना का परिणाम है।

स्त्री समाज की मूल इकाई है, परंतु भारतीय सन्दर्भ में नारी, विशेषकर दलित नारी, जाति एवं पितृसत्ता के दोहरे अभिशापों का तीखा दंश झेलने को अभिशप्त है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिला होने के साथ-साथ दलित होने से भी महिला की तकलीफें कई गुना बढ़ जाती हैं। भारतीय समाज जाति और धर्म पर आधारित है। यह पितृसत्तात्मक भी है, पितृसत्ता ने सभी नियम अपनी सुविधा के अनुसार बनाये हैं। दलित महिलाओं को जाति और पितृसत्ता दोनों के उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। घर के बाहर गैरदलित उन्हें लहूलुहान करते हैं तो घर के अंदर दलित पुरुषों की सामंती मानसिकता, वर्चस्व और शारीरिक हिंसा उन्हें तोड़ देती है।

जिस प्रकार आज युग तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है, प्रगति की ओर, आविष्कारों की ओर, ज्ञान की ओर, उसी प्रकार राज्यों, देशों और मानव जाति में भी परिवर्तन हुए हैं। मनुष्य सभी अधिकारों और सफलताओं को पाने के लिए अथक प्रयास कर रहे है। साथ ही मनुष्य ने अपने काम में हस्तक्षेप या अपने खिलाफ होने वाले शोषण का विरोध करना और अपने अधिकार पाने के लिए विरोध करना भी शुरू कर दिया है। आधुनिक युग में ऐसी मनोवृत्तियों का सबसे अधिक प्रभाव महिलाओं और दलित महिलाओं पर पड़ा है। आज की दलित महिलाएं अपने स्वाभिमान और अधिकारों के प्रति जागरूक हैं। आज महिलाएं सिर्फ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि कई क्षेत्रों में अपना वर्चस्व स्थापित करने में आगे बढ़ रही हैं। लेकिन अधिकतर देखा जाता है कि वे हर क्षेत्र में किसी न किसी तरह के दबाव या शोषण का शिकार बन रही हैं। आज दलित महिलाओं में इन शोषणों से मुक्ति पाने और अपने अधिकार पाने के लिए प्रतिरोध का स्वरूप दिखाई देने लगा है। साहित्यकार आज कहानियों के माध्यम से दलित, दलित स्त्री, आदिवासी आदि सामाजिक पक्ष को उभरते हुए उनसे जुडी समस्याओं और आज उनकी स्थिति से हमें अवगत कराते है।

समाज में दलित स्त्री का अस्तित्व स्त्री शरीर के अस्तित्व से अधिक नहीं माना जाता है। कहीं न कहीं इसके पीछे मुख्य कारक शिक्षा, आर्थिक स्थिति या जाति है। शादी करना, बच्चे को जन्म देना और हर पुरुष की कुंठा का शिकार बनना उसकी नियति बन गई है। शिक्षा, आर्थिक और जाति जैसे कारणों से दलित महिलाएँ न तो ठीक से सोच पाती हैं और न ही कुछ कर पाती हैं। कुछ दलित महिलाएँ, जिनके परिवार संपन्न हैं, संपन्न परिवारों के दलित पुरुष उन महिलाओं पर वही अत्याचार करते हैं जो उन्हें अपने उच्च जाति के स्वामियों से विरासत में प्राप्त हैं। दोनों ही भारत की ब्राह्मणवादी पितृसत्ता के गुलाम हैं।

दलित महिलाओं के शोषण का एक स्तर है वह न केवल लिंग के आधार पर ही नहीं बल्कि जाति के आधार पर भी किया जाता है। दूसरे स्तर पर मध्यम वर्ग का दलित समाज आता है। इस स्तर का पुरुष सामाजिक कुंठा और अपनी परिस्थितियों का गुलाम होते है यहां न सिर्फ परिवार के पुरुष महिलाओं का शोषण करते हैं, बल्कि समाज भी इन महिलाओं को कमजोर समझकर उनका शोषण करता है, जिससे उनका शोषण दोगुना हो जाता है।

दलित महिलाओं के प्रति पितृसत्ता, परम्पराओं और दूसरों की अज्ञानता के कारण महिलाओं से अपनी स्वतंत्रता की मांग करने की पारंपरिक अपेक्षा की जाती है। यहाँ दलित महिला को अपनी पारंपरिक मानसिकता से ऊपर उठकर अज्ञानता से ज्ञानवान बनना होगा। महिलाओं को अपने अधिकारों को स्वयं समझने की आवश्यकता है, दलित समाज में शिक्षित महिलाएँ भी दबाव के कारण अपने सपनों को छोड़ देती हैं। दलित महिलाओं के साथ इंसानियत नहीं के बराबर है, कि उन्हें गुलामी और बंधुआ मजदूरी की तरह शोषण किया जाता है। आज भी इस समाज में जहां हम आधुनिक सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं, वहीं छोटी-छोटी जरूरतों के लिए उनकी जान दांव पर लगी रहती है। उनकी स्थिति बिल्कुल 'रोज कुआं खोदना और रोज पानी पीना' के बराबर है। यहां अगर पुरुषों के अहंकार को छोड़ दिया जाए तो दलित पुरुष और महिलाओं में

ज्यादा बिखराव नहीं हो पाते है। पुरुष और महिला दोनों समान रूप से काम करते हैं, इसके बावजूद महिलाओं के श्रम का मूल्य कम आंका जाता है।

दलित महिलाओं की तीसरी पीढ़ी के व्यक्तित्व विकास के केंद्र में डॉ. अंबेडकर का प्रभाव दिखाई देता है। इस पीढ़ी की महिलाएं अपनी गुलामी के कारणों को समझती हैं। वे शिक्षा के प्रति जागरूक हैं। वे ब्राह्मणवादी समाज के साथ-साथ पितृसत्तात्मक समाज को भी चुनौती देती हैं। दलित कथा साहित्य के शिल्प में दलित महिलाओं की उपस्थिति भी इसी पर आधारित है। उनके संवादों में ठेठ और देशज शब्दों का प्रयोग किया गया है। आज के समय में दलित महिलाओं के प्रति पारंपरिक रूढ़िवादिता में थोड़ा बदलाव आया है। दरअसल, इस शोध प्रबंध का औचित्य यह है कि दलित महिलाओं को लेकर समाज में और समाज के लोगों में जो भी पूर्वाग्रह है, उससे बाहर निकलने की जरूरत है। एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के प्रति छुआछूत की भावना एक अमानवीय स्थिति को दर्शाती है।

समाज तथा साहित्य में दलित स्त्रियों की उपेक्षापूर्ण स्थिति को देखते हुए मेरे लिए इसे नजरअंदास करना कठिन था इसलिए भी प्रस्तुत विषय की चुनाव किया। दलित स्त्रियों की स्थिति हमेशा से दयनीय रही है। उनके पक्ष में बात करके उनकी समस्याओं को दूर तो नहीं किया जा सकता लेकिन मेरा मानना है कि समाज तथा साहित्य में उनके लिए प्रतिरोध ज़रूर किया जा सकता है।

इस शोध का उद्देश्य समाज और साहित्य में दलित महिलाओं के शोषण की पहचान करना है। दलित महिलाएं किसी भी समाज, वर्ग, धर्म की महिलाओं की तरह आगे बढ़ सकती हैं, लेकिन अवसरों की कमी के कारण उन्हें पीछे रहना पड़ता है।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ

- स्त्री चेतना के विविध रूपों को लेकर अध्ययन करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

- स्त्री चेतना, स्त्री चिंतन से जुड़ा एक पहलू है, जिसके केन्द्र में उनके सम्पूर्ण अस्तित्व को पहचानने की विचारधारा है। इस शोध की मुख्य उपलब्धि दलित महिला को समाज में उसकी पहचान और अधिकारों को पूर्ण रूप से स्थापित करने तथा उसे एक इंसान के रूप में देखने और स्वीकार करने में सक्षम बनाना है।
- दलित लेखकों द्वारा चित्रित और चर्चित दलित महिला पात्रों का संघर्ष, प्रतिरोध और अस्मिता अपने आप में अद्वितीय है, जो सशक्त साहित्य की एक सशक्त धारा के रूप में बहती और चर्चा में है। इससे शोध का क्षेत्र निश्चित ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।
- दलित स्त्री अपने अस्मिता के तहत अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही है, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाएगी।
- दलित साहित्यकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री चेतना के विभिन्न रूपों, समस्याओं, प्रतिरोध की भाव, संघर्षों को विभिन्न परिवेश के साथ चित्रित किया हैं, अतः चर्चित कहानियों में दलित स्त्री चेतना के विविध रूपों को प्रस्तुत करने में दलित लेखकों ने काफी सफलता प्राप्त हुई है।
- अस्पृष्यता की भावनाओं को दलित कहानीकारों ने अपनी कहानियों के पात्रों के माध्यम से विरोध की पुरजोर कोशिश की है। प्रस्तुत कहानियों में छुआ-छूत के विविध रूपों को देख सकते है।
- दलित महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति दलित पुरुषों की तुलना में कम है।
- दलित कहानियों में दलित महिलाओं को पुरुषों से अधिक समस्याओं और कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
- दलित स्त्री की समस्याओं का हल व्यक्तिगत और सार्वजनिक प्रयास से ही सम्भव हो सकता है।

- पुराने धर्म एवं पुरुष सत्ता की अराजक बेडियों को तोड़ने का संकल्प लेकर विकास के पथ पर आगे बढ़ रहे है।
- आधुनिक कहानियों में सभी दलित महिला पात्र अपने जागरूक कार्यों के माध्यम से पितृसत्तात्मक आधिपत्य को चुनौती देते हैं और दलित महिलाओं की जागरूक प्रकृति को उजागर करते हैं।
- दलित स्त्री चतुर्दिक दिशाओं में सक्रीय है, उसकी दृष्टि अतीत से लेकर यथार्थ के थपेडों से प्रति पल बदलते हुए वर्तमान और वर्तमान के लिए उत्तरदायी कारकों तक से अछूती नहीं है, यहाँ तक की समय की गर्त में छिपे हुए भविष्य तक वह अपनी दृष्टि पहुँचाने का यत्न कर रही है।

- **अध्ययन की नई दिशाएँ**

हर शोध विषय की अपनी सीमा होती है। मेरा शोध कार्य भी अपनी सीमा में रहकर सम्पन्न हुआ है। इस शोध अध्ययन के उपरांत निम्नलिखित विषय उभरकर सामने आए है जिसमें स्वतंत्र रूप से अनुसंधान की माँग करते हैं और शोध कार्य हो सकता है-

- भारतीय भाषाओं की दलित कहानियों में स्त्री चेतना - एक अध्ययन
- समाज में शिक्षित दलित महिलाओं और अशिक्षित दलित महिलाओं का जीवन संघर्ष–विश्लेषणात्मक - अध्ययन
- भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन (दलित कहानियों के विशेष संदर्भ में)
- दलित स्त्री चेतना समकालीन लेखिकाओं के कथा साहित्य में - विश्लेषणात्मक अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथ

❖ **आधार ग्रंथ**

क्रम	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
1	रजतरानी मीनू	दलित स्त्री केंन्द्रिद कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण-2023
2	ओमपेरकाश वाल्मीकि	सलाम	राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2004
3	रमणिका गुप्ता	दलित कहानी संचयन	साहित्य अकादमी प्रकाशन
4	सुशीला टाकभौरे	कथारंग सुशीला टाकभौरे की संपूर्ण कहानियाँ	प्रलेक प्रकाशन
5	रजत रानी मीनू	हम कौन है	वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012
6	ओमपेरकाश वाल्मीकि	घुसपैठिए	राधाकृष्ण प्रकाशनप्रथम , 2003- संस्करण
7	डॉ. कुसुम मेघवाल	अंगारा	प्रबंधक मूल निवासी प्रकाशन, संस्करण 2006

❖ **सहायक ग्रंथ सूची**

क्रम	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
1	डॉ. राजेंद्र खैरनार	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में स्त्री विमर्श और दलित विमर्श	जगत भारती प्रकाशन, संस्करण 2016
2	पुन्नीसिंह, कमला प्रसाद, राजेन्द्र शर्मा	भारतीय दलित साहित्य:परिप्रेक्ष्य	वाणी प्रकाशन, संस्करण 2003
3	मुंशी एन.एल रवोब्रागडे	मध्यप्रांत में दलित आन्दोलन का इतिहास	मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी
4	प्रो. श्रीराम शर्मा	समकालीन हिन्दी साहित्य विविध विमर्श	वाणी प्रकाशन
5	आर. चन्द्रा, कन्हैयालाल चंचरिक	आधुनिक भारत का दलित आन्दोलन	यूनिवेर्सिटी पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण 2003

क्रम	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
6	डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी	दलित साहित्य सृजन के संदर्भ में	कामना प्रकाशन, संस्करण 1999
7	सं. गिरिराज शरण	दलित जीवन की कहानियाँ	प्रभात प्रकाशन, संस्करण 2002
8	डॉ. नीरजा वी.एस	ममता कालिया की कहानियों में नारी	अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2017
9	नारायण राठौड़	सूरजपाल चौहान की कहानियों में दलित जीवन	जवाहर पुस्तकालय, संस्करण 2007
10	शंभू गुप्त	कहानी समकालीन चुनौतियाँ	वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2009
11	सूरज पलिवाल	इक्कीसवीं सदी का पहला दशक और हिन्दी कहानी	वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012
12	संजीव कुमार दूबे	हिंदी कहानी और सांप्रदायिकता	मेधा बुक्स, प्रथम संस्करण 2012
13	श्रावणी भट्टाचार्य	अंतिम दशक के महिला कहानीकारों के बदलते सामाजिक संदर्भ	अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2017
14	विजयश्री के. वी	स्त्री का प्रतिरोध:चित्रा मृदुगल के उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी में'	जवाहर पुस्तकालय, संस्करण 2010
15	डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव	इक्कीसवीं सदी का महिला सशक्तिकरण:मिथक एवं यथार्थ	ओमेगा पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण 2010
16	डॉ. शोभा पवार	हिन्दी कहानी और नारी विमर्श के अहम सवाल	अन्नपूर्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2009
17	कमलेश कुमार गुप्ता	भारतीय महिलाएँ, शोषण, उत्पीडन, एवं अधिकार	बुक एलक्लेव, प्रथम संस्करण 2005
18	डॉ. संगीता.के	नारी चेतना की सार्थक तलाश	जवाहर पुस्तकालय, प्रथम संस्करण 2013

क्रम	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
19	डॉ. अज्जू शुक्ला	आधुनिक नारी एवं महिला सशक्तिकरण	अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010
20	डॉ. धर्मवीर	डॉ. अंबेडकर के प्रशासनिक विचार	वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2004
21	अभय कुमार दूबे	आधुनिकता के आइने में दलित	वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2002

❖ **पत्र-पत्रिकाएँ**

क्रम	पत्रिका	संपादक
1	हंस	राजेन्द्र यादव
2	आलोचना	अरुण कमल
3	नया पथ	मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, चंचल चौहान

SL. NO	Website
1	https://readerblogs.navbharattimes.indiatimes.com/jls11/%E0%A4%A6%E0%A4%B2-%E0%A4%A4-%E0%A4%9A-%E0%A4%A4%E0%A4%A8-%E0%A4%94%E0%A4%B0-%E0%A4%B0-%E0%A4%9C%E0%A4%A8-%E0%A4%A4/
2	https://www.uttarvarta.com/2017/11/politics_20.html#google_vignette
3	https://www.exoticindiaart.com/book/details/nari-asmita-in-hindi-novels-rzz278/
4	https://www.sbistudy.com/dalit-literature-in-hindi/#google_vignette
5	https://sahityakunj.net/blog/kahaniyon-mein-pratibimbit-dalit-stri#google_vignette
6	https://www.uttarvarta.com/2017/11/politics_20.html